विलुप्त होती भाषाएँ और अस्त होती सभ्यताएँ

जगदीशन ए.के.[1], श्याम किशोर वर्मा [2] एवं आशुतोष कुमार [3]

भूमिका

भाषा के माध्यम से हम अपनी भावनाओं और अपने विचारों को सुचारू रूप से व्यक्त करते हैं। कहा जाता है कि भाषा वैचारिक आदान-प्रदान और अंतर्मन की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम है। यही नहीं, वह हमारे व्यक्तित्व के निर्माण और विकास तथा हमारी अस्मिता और सामाजिक पहचान का भी साधन है। साथ ही वह हमारी संस्कृति का सर्वोत्तम वाहक भी है। कहा जा सकता है कि बगैर भाषा के, मनुष्य तो अपने इतिहास तथा परम्परा से कट जाते हैं। भाषाएं न सिर्फ शब्दों को संजोती, बल्कि सदियों पुराने के ज्ञान को भी अपने में संजोए रखती हैं। ऐसी स्थिति में अगर एक भी भाषा दुनिया से विलुप्त होती है, तो उसका नुकसान सारी मानव जाति को होगा और हम इसकी कल्पना नहीं कर सकते कि इससे कितना बड़ा नुकसान होगा।

भाषाओं का विलोप

वैश्विक संदर्भ में अगर भाषाओं के विलोप की बात करें तो हाल ही की एक घटना का उल्लेख करना समीचीन होगा । वर्ष 2022 में जब 93 साल की क्रिस्टीना कालडेरॉन का देहांत हुआ तब दक्षिण 'अमेरिका के चिली देश के यगन समुदाय की भाषा यमना' का अस्तित्व विश्व पटल से मिट गया। वर्ष 2003 में उनकी बहन के निधन के बाद क्रिस्टीना कालडेरॉन 'यमना' भाषा बोलने वाली अंतिम व्यक्ति थी। अब 'यमना' भाषा बोलने वाला कोई भी इस दुनिया में नहीं है। उन्होंने अपनी भाषा को बचाने के लिए फ्रेंच में अनुवाद सहित इसका एक कोश बनाने के लिए प्रयासरत थीं।

क्रिस्टीना कालडेरॉन

इसी प्रकार मेक्सिको में कई सदियों से बोली जाने वाली भाषा थी 'अयपेनको'। वर्ष 2011 में इसके बोलने वाले केवल दो लोग बचे थे – 75 वर्ष के मैनुअल सेगोविया और 69 वर्ष के इसिद्रो वेलास्क्वेज़। अब शायद यह भाषा दुनिया विलुप्त हुई होगी।

[1]उप निदेशक (राजभाषा), भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु
[2]वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर,
[3]उप- निदेशक (राजभाषा), राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली

मैनुअल सेगोविया

सोचिए मैरी स्मिथ के उस अकेलेपन के बारे में, जिसको उन्होंने 89 वर्ष की आयु में 2008 में अपने निधन के पहले सामना की थी। वे अलास्का के एयाक लोगों की भाषा जानने वाली अंतिम व्यक्ति थी। इसी प्रकार नेड मेन्ड्रेल मैंक्स भाषा, जो आइरिश और स्कोट्स गेलिक भाषाओं के समान थी, बोलने वाला अंतिम व्यक्ति थे, जिनकी मृत्यु 1974 में हुई थी। ऑस्ट्रेलिया के प्रोफेसर लिंडेल ब्रोमहैम कहती हैं कि दुनिया में वर्तमान में मौजूद भाषाओं में से लगभग आधी भाषाएँ ख़तरे में हैं। उनके अनुसार सदी के अंत तक दुनिया की 1,500 भाषाएँ बोलचाल में नहीं रहेंगी। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुमान के अनुसार, इस सदी के अंत तक 96 प्रतिशत भाषाएं और उनकी लिपियां समाप्त हो जाएंगी तथा 2500 से भी अधिक बोलियां समाप्त होने के कगार पर हैं। ईसाइयों और यहूदियों के धर्मग्रंथों की मूल भाषा हिब्रू थी, जो अब इस्तेमाल में नहीं है। इसी तरह भारत में पाली, प्राकृत सहित कई भाषाओं ने अपना अस्तित्व खो दिया है।

भारत में अनगिनत भाषाएं बोली जाती हैं। भारत के संदर्भ में यह कहावत बिलकुल सही ठहरता है कि 'कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी। 2011 की जनगणना के अनुसार देश के सवा अरब लोग 1652 मातृभाषाएँ बोलते हैं। इसमें सबसे ज्यादा 42,20,48,642 लोग (41.03%) हिंदी भाषी हैं। राजस्थानी बोलने वाले 1,83,55,613 (1.78%) लोग हैं। मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र के 28,672 वर्ग मील के बड़े क्षेत्र में भील जाति के लोग रहते हैं। पर भीली बोलने वाले 95,82,957 लोग (0.93%) और संथाली बोलने वाले तो मात्र 64,69,600 (0.63%) लोग ही हैं। देश में लगभग 550 जनजातियां निवास करती हैं, जिनकी अपनी-अपनी बोलियां भी हैं। लेकिन इनमें से कई बोलियों को बोलने वालों की तादाद अब घटकर सिर्फ हजारों में सिमट चुकी है। जनजातीय बोलियों ने अपने वाचिक स्वरूप में ही हजारों सालों का सफ़र तय किया है। इन्हें लिपिबद्ध किए जाने की अब तक कहीं कोई गंभीर कोशिश नहीं हुई है। यहाँ पर इसका उल्लेख करना समीचीन लगता है कि हाल ही में राज्य सभा में माननीय केंद्रीय अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री ने एक रिपोर्ट रखी थी कि भारत में फ़ारसी जनता की

मैरी स्मिथ

आबादी वर्ष 1941 के 1,14,000 से वर्ष 2001 में 69,601 और वर्ष 2011 में 57,264 के रूप में कम हुई। मतलब यह कि फ़ारसी भाषा बोलने वालों की संख्या पिछले 80 सालों में आधी से ज्यादा कम हुई। इससे हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि पिछले 75-80 सालों में भारत में ऐसी कितनी आबादियाँ कम हुई होंगी और कितनी भाषाएँ विलुप्त हुई होंगी।

वर्ष 2010 में आई युनेस्को की 'इंटरेक्टिव एटलस' की रिपोर्ट के मुताबिक अपनी भाषाओं को भूलने में भारत अव्वल नंबर पर है। दूसरे नंबर पर अमेरिका (192 भाषाएँ) और तीसरे नबंर पर इंडोनेशिया (147 भाषाएँ) हैं। विश्व में प्रचलित मौजूदा भाषाओं में से 199 भाषाएँ ऐसी हैं, जिन्हें अब महज 10 लोग और 178 भाषाएँ ऐसी हैं, जिन्हें अब 10 से 50 लोग ही बोलते या समझते हैं यानी इनके साथ ही ये भाषाएँ खत्म हो जाएँगी। भारत के संदर्भ में, युनेस्को के 'एटलस ऑफ दि वर्ल्डस लैंग्वेजेस इन डेंजर' के अनुसार अकेले उत्तराखण्ड में ही गढ़वाली, कुमाऊँनी और रेंगपो सहित दस बोलियाँ खतरे में हैं।

भाषाओं का विलुप्त होना सिर्फ भाषाओं का विनाश नहीं

भाषाओं के विलुप्त होने से सिर्फ भाषाएं ही नहीं, उनके साथ उनमें संजोया अनमोल व अनगिनत ज्ञान भी विलुप्त हो जाता है। पारम्परिक भाषाओं के विलुप्त होने का यह खतरा हमारे लिए बहुत बड़ा इसलिए है कि इससे हमारे पुरखों का संजोया ज्ञान भी विलुप्त होता जा रहा है। इसके बारे में यूनिवर्सिटी ऑफ ज्यूरिच के शोधकर्ताओं का मानना है कि जैसे-जैसे स्थानीय पारंपरिक भाषाई विविधता खत्म होती जाएगी, उसके साथ ही सांस्कृतिक विविधता, सदियों पुराने उपचार और औषधीय पौधों का ज्ञान भी समाप्त होते जाएंगे ।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने के बारे में सबसे पहले पहल किया था बांग्लादेश ने। युनेस्को की आम सभा द्वारा 1999 में इस प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया था और वर्ष 2000 से विश्व भर में इसको मनाया जा रहा है। हर वर्ष 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो विलुप्त होने वाली भाषाओं के बारे में जागरूकता पैदा करने और इन्हें बचाने के प्रयास की ओर संकेत देता है।

बहुत ही आश्चर्य की बात है कि हर 14 दिन में दुनिया में एक भाषा विलुप्त हो रही है। हाल ही में विश्व भर में फैली कोरोना महामारी का हवाला लेते हुए कह सकते हैं कि जितने दिन में कोरोना मरीज़ के सम्पर्क में आए व्यक्ति का क्वारंटीन पूरा होता है, उतने दिन में एक भाषा मर जाती है। विज्ञात भाषा वैज्ञानिक एवं भारतीय जन भाषाई सर्वेक्षण (Peoples Linguistic Survey of India) के डॉ. जी.एन. डेवी का कहना है कि विश्व में आज प्रचलित 7139 भाषाओं में से लगभग 4000 भाषाएँ लुप्त होने के कगार पर हैं। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण एवं चिंताजनक बात यह है कि इनमें से अधिकांश भाषाएँ भारत की है।

भाषाओं का विलोप विश्व परिदृश्य में

इंडोनेशिया में 707 भाषाएं बोली जाती हैं, जिनमें से लगभग आधी भाषाएं ऐसी हैं, जिन्हें बोलने वाले गिनती के ही लोग बचे हैं। मलेशिया में 136 भाषाएं हैं, जिनमें से 112 भाषाएं विलुप्त होने की कगार पर खड़ी हैं। युनेस्को

के अनुसार वैश्विक स्तर में वर्तमान में प्रचलित भाषाओं में से लगभग 2500 भाषाएं ऐसी हैं, जिन्हें बोलने वाले लोगों की संख्या 10 हज़ार या उससे कम है; 178 भाषाएं ऐसी हैं, जिन्हें 10 से 50 लोग बोलते हैं, विश्व में 178 भाषाएँ ऐसी हैं, जिन्हें बोलने वाले लोगों की संख्या 150 से कम है। जबकि 146 भाषाएं हैं ऐसी हैं, जिन्हें बोलने वाले लोग 10 से भी कम लोग बचे हैं। यही नहीं वर्ष 1950 से लेकर अब तक 230 से अधिक भाषाएं पूरी तरह मर चुकी हैं। ये आंकड़े आज हमें एक संदेश भी देते हैं कि अगर हमने अपनी मातृभाषा को लेकर गंभीरता नहीं दिखाई तो वह दिन दूर नहीं होगा जब हम संवाद तो करेंगे लेकिन उस संवाद में हमारे अंतर्मन की वास्तविक अभिव्यक्ति नहीं होगी अर्थात् वह संवाद भावनाहीन होगा।

डॉ. डेवी का कहना है कि 1961 की जनगणना के बाद भारत में 1652 मातृभाषाओं का पता चला था। लेकिन पिछले 50 साल में भारत की क़रीब 20 फीसदी भाषाएँ विलुप्त हो गई हैं। माना जा रहा है कि लगभग ढ़ाई सौ से अधिक भाषाएँ विलुप्त हो गई हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय जन भाषाई सर्वेक्षण के अनुसार भारत में सिर्फ़ 780 भाषाएँ बची हैं। चिंता की बात यह है कि हमारे देश की कई भाषाएँ ऐसी हैं, जिनके जानकार 100 से भी कम लोग बचे हैं। इन भाषाओं में ज्यादातर मूल निवासियों द्वारा बोली जाती हैं। ये भाषाएं ख़तरनाक ढंग से विलुप्त होती जा रही हैं। दूसरी ओर 81 भारतीय भाषाओं स्थिति बहुत अच्छी नहीं हैं, जिनमें गढ़वाली, लद्दाखी, मिज़ो, शेरपा और स्पीति शामिल हैं। ये भाषाएँ अभी 'कमज़ोर' श्रेणी में हैं। विलुप्त हो रही भाषाओं में हिमालय क्षेत्र में बोली जाने वाली अहोम, एंड्रो, रंगकास, सेंगमई, तोलचा आदि भाषाएँ भी शामिल हैं।

विलुप्त होने वाली भाषाओं की सूचि में भारत और अमेरिका के बाद इंडोनेशिया का नाम आता है, जहाँ 147 भाषाओं का आने वाले दिनो में प्रयोग करने वाला कोई नहीं रहेगा। भाषाओं के खत्म होने की स्थिति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वर्तमान में दुनिया भर में 199 भाषाएँ ऐसी हैं, जिन्हें बोलने वालों की संख्या एक दर्जन से भी कम है। इनमें 'कैरम' भी एक ऐसी भाषा है, जिसे उक्रेन में मात्र छह लोग बोलते हैं। ओकलाहामा में 'विचिता' भी एक ऐसी भाषा, जिसे देश में मात्र दस लोग ही बोलते हैं। इंडोनेशिया में इसी प्रकार 'लेंगिल' बोलने वाले केवल चार लोग ही बचे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्वदेशी भाषा वर्ष

संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा में 2019 को अंतर्राष्ट्रीय स्वदेशी भाषा वर्ष मनाने का निर्णय लिया गया था। यह स्वदेशी भाषाओं को बचाने का एक महत्वपूर्ण प्रयास था। उस समय विश्व के लगभग 6,700 भाषाओं में से 40 प्रतिशत विलुप्ति के कगार पर थीं और भारत में 197 भाषाएँ लुप्त होने के कगार पर हैं। भारत के बाद दूसरे नंबर पर अमेरिका में स्थिति काफ़ी चिंताजनक है, जहाँ 192 भाषाएँ दम तोड़ती नज़र आ रही हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, भाषाएँ आधुनिकीकरण के दौर में प्रजातियों की तरह विलुप्त होती जा रही हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा किए गए अध्ययन से पता चलता है कि पिछले एक दशक में भाषाओं की विलुप्ति काफ़ी तेज़ी से हुई है। इस संदर्भ में

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने की प्रासंगिकता बढ़ रही है।

स्वदेशी भाषाओं का अंतर्राष्ट्रीय दशक 2022 - 2032

भाषाओं की विलुप्ति के संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय स्वदेशी भाषा दशक की चर्चा करना समीचीन लगता है। इस संबंध में कई लोग अपना-अपना अनुमान लगाते हैं। आशावादी लोगों का अनुमान है कि वर्तमान में प्रचलित भाषाओं में से कम से कम 50 प्रतिशत भाषाएं 2100 तक विलुप्त हो जाएंगी या विलुप्ति के कगार पर होंगी। अधिक निराशावादी, लेकिन यथार्थवादी अनुमान है कि 90-95 प्रतिशत भाषाएँ इस सदी के अंत तक विलुप्त हो जाएंगी या गंभीर रूप से खतरे में पड़ जाएंगे। इनमें से अधिकांश भाषाएँ स्वदेशी भाषाएँ हैं। इस सदी के अंत तक दुनिया में केवल 300-600 मौखिक भाषाएँ बची होंगी, जो खतरे से बाहर होंगी।

विश्व की स्वदेशी संस्कृतियों और भाषाओं को बचाने के प्रयास कर रहे स्थायी मंच ने स्वदेशी लोगों की गंभीर स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित किया है। इस मंच ने बार-बार स्वदेशी भाषाओं की संवैधानिक और कानूनी मान्यता, स्वदेशी भाषाओं के संरक्षण और पुनरुद्धार सुनिश्चित करने का आह्वान किया है तथा इस कार्य के लिए पर्याप्त धन सुनिश्चित करने की ओर भी ध्यान आकर्षित किया है। स्थायी मंच की सिफारिशों के आधार पर, संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक मामलों के विभाग ने स्वदेशी भाषाओं की स्थिति पर विचार करने के लिए 2008 और 2016 में दो अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ समूह की बैठकें आयोजित कीं।

यह ध्यान में रखते हुए कि स्वदेशी भाषाओं के पुनरुद्धार के लिए स्वदेशी लोगों, सदस्य देशों और संयुक्त राष्ट्र प्रणाली द्वारा निरंतर प्रयास की आवश्यकता है। स्वदेशी मुद्दों पर स्थायी मंच ने महासभा को 2019 में स्वदेशी भाषाओं पर एक अंतर्राष्ट्रीय दशक घोषित करने की सिफारिश की थी। स्थायी मंच की सिफ़ारिश पर संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2019 में 2022-2032 को स्वदेशी भाषाओं का अंतर्राष्ट्रीय दशक के रूप में घोषणा की। स्थायी मंच का मानना है कि अंतर्राष्ट्रीय दशक स्वदेशी भाषाओं के संरक्षण, पुनरुद्धार और प्रचार में गतिशीलता लाने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त इस मंच यह भी मानता है कि अंतर्राष्ट्रीय दशक की सफलता के लिए, स्वदेशी लोगों, देशों, संयुक्त राष्ट्र प्रणाली और अन्य प्रासंगिक हितधारकों की विश्वव्यापी भागीदारी सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। स्वदेशी भाषाओं का अंतर्राष्ट्रीय दशक का मुख्य उद्देश्य स्वदेशी भाषाओं के महत्वपूर्ण नुकसान की ओर ध्यान आकर्षित करना और स्वदेशी भाषाओं को संरक्षित और पुनर्जीवित करने तथा इनको बढ़ावा देना है।

स्वदेशी भाषाओं का अंतर्राष्ट्रीय दशक क्या है?

स्वदेशी लोगों को अक्सर "उन लोगों के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो पूर्व-आक्रमण और पूर्व-औपनिवेशिक समाजों के साथ एक ऐतिहासिक निरंतरता रखते हैं, जो अपने क्षेत्रों में विकसित होते हैं, खुद को उन क्षेत्रों पर प्रचलित समाजों के अन्य क्षेत्रों से अलग मानते हैं।" स्वदेशी भाषाओं को संरक्षित करने से न केवल भाषाई विविधता बल्कि दर्शन, विरासत, ज्ञान का उत्पादन,

मानवीय संबंधों और प्राकृतिक दुनिया की समझ, हमारे समाजों के भीतर शांति, सुशासन, सतत विकास, सामाजिक सामंजस्य और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को भी बढ़ावा मिलता है। स्वदेशी समुदायों और विद्वानों का यह भी तर्क है कि स्वदेशी भाषाएं सांस्कृतिक पहचान और उपनिवेशवाद के प्रतिरोध के लिए महत्वपूर्ण हैं। वे स्वदेशी भाषाओं और भाषा उपयोगकर्ताओं का समर्थन करने के लिए इसकी एक विस्तृत समझ प्रस्तुत करते हैं, जो भाषा के पुनरुद्धार से लेकर स्वास्थ्य देखभाल तक, शिक्षा से लेकर जलवायु परिवर्तन तक, नौकरी के अवसरों से लेकर लैंगिक समानता तक के विषयों को संबोधित करते हैं। यह व्यापक दृष्टि महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मानता है कि स्वदेशी भाषाओं को संरक्षित करना, पुनर्जीवित करना और बढ़ावा देना केवल भाषा से अधिक है।

स्वदेशी भाषाओं की विलुप्ति का मुख्य कारण यह है कि स्वदेशी लोगों का प्रवासन। यह उनकी भाषाओं को प्रभावित करता है। स्वदेशी की सामान्य समझ एक विशेष स्थान के लिए एक स्वदेशी समुदाय के संबंध पर जोर देती है, लेकिन स्वदेशी लोग कभी-कभी उस भूमि से दूर चले जाते हैं जहां वे और उनके पूर्वजों का जन्म हुआ था। उपनिवेशवाद, हिंसक संघर्ष, विकास परियोजनाओं और अन्य कारणों से संपूर्ण स्वदेशी समुदायों के विस्थापित होने के कई ऐतिहासिक और समकालीन उदाहरण हमारे सामने हैं।

स्वदेशी भाषाओं को संरक्षित करने, पुनर्जीवित करने और बढ़ावा देने के लिए किसी भी व्यापक दृष्टिकोण को कम से कम दो तरीकों से प्रवासन पर ध्यान देना चाहिए। सबसे पहले, प्रवासी समुदायों की विशेष परिस्थितियों को समझना चाहिए। दूसरा, मजबूत स्वदेशी भाषा समुदायों को बनाने और बनाए रखने के लिए स्वदेशी भाषा उपयोगकर्ताओं को प्रवासन के लिए बाध्य करने वाले कारकों को संबोधित करने की आवश्यकता है।

अंतर्राष्ट्रीय स्वदेशी भाषा दशक 2022-2032 का औचित्य

स्वदेशी लोगों के अधिकारों पर 2019 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने स्वदेशी मुद्दों पर स्थायी मंच की एक सिफारिश के आधार पर, 2022-2032 की अवधि को स्वदेशी भाषाओं का अंतर्राष्ट्रीय दशक घोषित करने वाला एक प्रस्ताव अपनाया। अंतर्राष्ट्रीय स्वदेशी भाषा दशक की उद्घोषणा अंतर्राष्ट्रीय स्वदेशी भाषा वर्ष 2019 का एक प्रमुख परिणाम है। स्थाई मंच के अनुसार दुनिया भर में बोली जाने वाली अधिकांश स्वदेशी भाषाएँ लुप्त होने के कगार पर हैं। इनके लुप्त हो जाने से उन संस्कृतियाँ और ज्ञान-भण्डार भी खतरे में पड़ जाते हैं। इसके अलावा, भौगोलिक सुदूरता अथवा ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भाषाई असमानताओं के कारण स्वदेशी लोग अक्सर अपने निवास के देशों में राजनीतिक और सामाजिक रूप से अलग-थलग होते हैं। कोविड-19 महामारी ने दुनिया भर में स्वदेशी लोगों के हाशिए पर जाने को बढ़ा दिया है, जिससे दुनिया की भाषाई विविधता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

स्वदेशी लोग न केवल पर्यावरण की रक्षा करने में अग्रणी हैं, बल्कि उनकी भाषाएँ ज्ञान और संचार की जटिल प्रणालियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्वदेशी भाषाएँ स्थानीय

संस्कृतियों, रीति-रिवाजों और मूल्यों को भी बढ़ावा देती हैं, जो हजारों वर्षों से कायम हैं। स्वदेशी भाषाएँ वैश्विक सांस्कृतिक विविधता की समृद्ध परंपरा का द्योतक हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्वदेशी भाषा दशक स्वदेशी भाषाओं को बढ़ावा देने और उनकी रक्षा करने में मदद करेगा और उन लोगों के जीवन में सुधार करेगा, जो उन्हें बोलते हैं तथा स्वदेशी लोगों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र घोषणा में निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में योगदान देगा।

भाषाओं को विलुप्त होने से बचाने के प्रयास

प्रोफेसर ब्रोमहैम के अनुसार किसी भाषा के अन्य स्थानीय भाषाओं के संपर्क में आना कोई बड़ी समस्या नहीं है और वास्तव में देखा जाए तो कई अन्य भाषाओं के संपर्क में आने वाली भाषाएं कम खतरे में हैं। विलुप्त हो रही भाषाओं को बचाने के लिए ऐसा प्रयास किया जाए कि जो भाषाएँ लिपिबद्ध नहीं हैं, उनकी लिपि विकसित की जाए ताकि उस भाषा में छिपे ज्ञान के भण्डारों का अभिलेखन किया जा सके और भावी पीढ़ियों के लिए संजोकर रखा जा सके। भारतीय भाषाओं को विलुप्त होने से बचाने के लिए कई संस्थाएँ कार्य कर रही हैं, जिनमें कर्नाटक के मैसूर में स्थित भारतीय भाषा संस्थान प्रमुख भूमिका निभाती है। यह संस्थान भाषा शिक्षण के क्षेत्र में कई पाठ्यक्रम चलाता है और आजकल ऑनलाइन माध्यम से भी ये पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं।

इसके अलवा लुप्त हो रही भाषाओं को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के हिंदी विभाग ने एक सराहनीय कदम उठाया है। उत्तर प्रदेश के मेरठ के बावली गांव के ठेठ मुहावरे अब बावली तक सीमित नहीं है। किनौनी में सदियों से चली आ रही लोकोक्ति से भी अब सभी लोग वाकिफ़ हो रहे हैं। हिंदी विभाग ने इन क्षेत्रों में प्रचलित पाँच सौ से अधिक ठेठ लोकोक्तियों और मुहावरों को एकत्रित कर किताब के रूप में प्रकाशित किया है और इसे पाठ्यक्रम में भी शामिल किया है, जो बहुत ही ज़रूरी था। भारत की कई भाषाओं के संदर्भ में ऐसे महत्वपूर्ण प्रयासों की नितांत आवश्यकता है, क्योंकि पहले से ही उल्लेख किया गया है कि भाषा का सीधा संबंध उस क्षेत्र की संस्कृति, परिवेश, अस्मिता, खान-पान और रहन-सहन से है। कहा जाता है कि भाषा अपने आप में समाज का प्रतिबिंब होती है। इसलिए भाषा के संरक्षण के लिए वैचारिक एवं प्रायोगिक, दोनों पहल आज के समय की माँग है।

भाषाओं को बचाने में स्कूली शिक्षा के संदर्भ में कहा जाए तो हमें ऐसे पाठ्यक्रम का विकास करने की आवश्यकता है, जो एक साथ कई भाषाओं का समर्थन करें। साथ ही स्वदेशी भाषा में प्रवीणता के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए। विलुप्त होने के कगार पर खड़ी भाषाओं या बोलियों को जब तक छात्रों के पाठ्यक्रम से नहीं जोड़ा जाता, तब तक इन्हें बचाने की बात करना फ़िज़ूल है। खासतौर पर प्राथमिक शिक्षा में इनको शामिल करना बहुत जरूरी है। प्राथमिक शिक्षा ज्यादातर हिंदी और अंग्रेजी तक ही सिमट गई है। इस कारण बच्चे अपनी स्थानीय भाषाओं से लगातार कटते जा रहे हैं । यदि समय रहते इन बोलियों के संरक्षण के लिए ठोस कदम नहीं उठाए जाते तो जल्दी ही ये पूरी तरह से विलुप्त हो जाएंगी। इससे सिर्फ

एक बोली या भाषा ही नहीं, बल्कि मानव समाज की कई अमूल्य विरासतों की भी विलुप्ति हो जायेगी।

सरकार की नीतियों की वजह से कभी-कभी भाषाएँ विलुप्त हो सकती हैं। इसलिए सरकार के लिए ज़रूरी है कि भाषा को ध्यान में रखते हुए विकास की योजना बनाएँ। संविधान की आठवीं अनुसूची में फिलहाल 22 भाषाओं को स्थान दिया गया है। केवल उन्हीं भाषाओं को सुरक्षित रखने के प्रयास करने के बजाय, बिना किसी भेदभाव के सभी भारतीय भाषाओं को संरक्षित करना ज़रूरी है। इस संबंध में सरकार की नितियाँ बदलने की आवश्यकता है और सरकार की मदद की ज़रूरत है अन्यथा देश की कई भाषाओं के विलुप्त होने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा।

संदर्भ:

1. डॉ. जी.एन. डेवी - भाषाओं का कब्रगाह बन गया है भारत, भारतीय जन भाषाई सर्वेक्षण
2. डॉ. अजित कुमार - हिंदी का पुनर्जीवन
3. देश में विलुप्त होती भाषाएं, शोध जरूरी - दैनिक जागरण समाचार पत्र
4. विलुप्त होती भाषाओं से कला, संस्कृति और परंपराओं के ख़त्म होने का ख़तरा – दैनिक भास्कर समाचार पत्र
5. ललित मौर्या - भाषाओं का सिकुड़ता संसार: सदी के अंत तक गुमनामी के अन्धकार में खो जाएंगी दुनिया की 1,500 भाषाएं, वेब पत्रिका, डाउन टु एर्थ
6. मानवेंद्र कुमार – विलुप्त होती भाषाओं को बचाने के उपाय करने होंगे, प्रभा साक्षी, वेब पत्रिका
7. डॉ. राधेश्याम द्विवेदी – भारत की विलुप्त होती बोलियाँ और भाषाएँ
8. https://www.un.org
9. en.wikipedia.org

संध्या अग्रवाल

संध्या अग्रवाल भारतीय महिला क्रिकेट टीम की पूर्व कप्तान हैं। 1984 और 1995 तक, इस इंदौरी क्रिकेट दिग्गज ने 13 टेस्ट मैचों में भाग लिया, जिसमें 50.45 की बल्लेबाजी औसत के साथ 1110 रन बनाए, जिसमें 4 शतक शामिल थे। उन्होंने 1986 में इंग्लैंड में एक टेस्ट मैच की एक पारी में 190 रन बनाकर विश्व रिकॉर्ड बनाया। हालाँकि, डेनिस एनेट्स, जिन्होंने 1987 में 193 रन बनाए थे, ने उनके स्कोर को पीछे छोड़ दिया। उन्होंने 21 महिला एकदिवसीय मैचों में भी भाग लिया और 31.50 की औसत से 567 रन बनाए। संध्या ने भारतीय महिला क्रिकेट टीम और रेलवे महिला क्रिकेट टीम सहित अन्य उल्लेखनीय टीमों के लिए खेला। अपनी सेवानिवृत्ति के बाद, अर्जुन पुरस्कार विजेता क्रिकेट चयनकर्ता और कोच बन गए। वह एमपीसीए की बालिका अंडर-19 और सीनियर महिला टीम की अध्यक्ष होने के साथ-साथ बीसीसीआई की महिला समिति की सदस्य भी हैं।